सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - पुष्टिसखा

VIBRANT PUSHTI

“ जय श्री कृष्ण “

कितना मधुर सा दिन है
कितनी मधुर सी निशा है

मधुर दिन में मधुर गुंजन
मधुर निशा में मधुर आहट

श्याम आये श्याम रंग लिए
श्याम आये श्याम रंग रंग ने
श्याम आये श्याम रंग खेलने
श्याम आये श्याम रंग में डूबो ने

जैसे रंग की एक लहर
मैं दौड़ी नंद कुंवर ओर
अपने रंग से इतना रंग डारा
मैं श्याम रंग सी होरी

सररर सररर भरी पिचकारी
फररर फररर उड़ी रंग डारी
मैं भयी श्याम रंग की सांवरी
श्याम रंग सी श्याम दीवानी
श्याम सुहागिन होई
अरि! मैं श्याम सुहागिन होई

ऐसी रंग दी प्रिये ने
ऐसी रंग दी
श्याम चटक श्याम मटक
श्याम रपट लपट होई
🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷
श्याम मेरो प्रीत प्रियतम
मैं श्याम सांवरी बावरिया
🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

हे कान्हा! तु कब आयेगा मेरे द्वार?

हे कान्हा! तु कब लिखेगा हथेली पर नाम?

रुमझुम झुमझुम पैजनिया बजी

किसीने पुकारा - गुदवाई लो अपना नाम

एक सखी ने हाथ पकड़कर बिठाया किशोरी सामने

कपोल पर लिखो - कान्हा

नासिका पर लिखो - नंदकिशोर

अधर पर लिखो - अच्युतानंद

हडपची पर लिखो - हरि

गले पर लिखो - गोपाल

गाल पर लिखो - गोविंद

कर्ण पर लिखो - कन्हैया

बाजु पर लिखो - बिहारी

हथेली पर लिखो - हरिहर

माथे पर लिखो - मोहन

रंग रंग से मुझे ऐसे रंग दो

हर रंग में घनश्याम

हर तरंग में श्याम

जब जब पलक उठे तब तब निरखुं सुंदर श्याम

जब जब पलक झुकें तब तब निहारु प्रेमी प्रियतम

श्याम श्याम श्याम

Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अग्नि प्रचंड प्रज्वलित हो उन्हें होली कहते हैं 🙏
अग्नि दीपक ज्योत प्रज्वलित हो उन्हें दीपावली कहते हैं 🙏

प्रचंड ज्वाला अपनी आसपास के अनेक दुष्टों को मारे 🙏

टिमटिमाती दीपक ज्योत अपनी आंतरिक प्रकटाये 🙏

होली रंग रंगों से खेलें 🙏
दीपावली रंग कला से अभिभूते 🙏

होली नाच नचाते बरजोरे 🙏
दीपावली संग संग हंसते विजोरे 🙏

होली नटखट अदाओं से झुमे 🙏
दीपावली शांत रीतभातों से घुमे 🙏

होली प्रेम गालियों की बौछारों से गाये 🙏
दीपावली प्रेम आशीर्वाद की कृपा से राजे 🙏

होली की बधाई 🌷🙏🌷
रंगों की पूरवाई 🌷🙏🌷
भांग की पीलाई 🌷🙏🌷
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

रंग
अपना रंग
साथ का रंग
कुटुंब का रंग
समाज का रंग
समय का रंग
प्रकृति का रंग
सृष्टि का रंग
जगत का रंग
ब्रह्मांड का रंग
वात्सल्य का रंग
स्नेह का रंग
दोस्ती का रंग
प्रेम का रंग
वैविध्यता का रंग
कला का रंग
विद्या का रंग
संगीत का रंग
व्यवहार का रंग
स्वभाव का रंग
सेवा का रंग
कमाई का रंग
गर्व का रंग
अहंकार का रंग
अभिमान का रंग
कक्षा का रंग
कर्म का रंग
धर्म का रंग
भक्ति का रंग
परिवर्तन का रंग
आसमां का रंग
धरती का रंग
सूर्य का रंग
चंद्र का रंग
सागर का रंग
वातावरण का रंग
हवा का रंग
विविध रंगों से अपना एक रंग करना 🙏
आज हम कहीं रंगों में रहते हैं
आज हम कहीं रंगों से निपटते हैं
आज हम कहीं रंगों से सजते हैं
आज हम कहीं रंगों से जीते हैं
खुद ही समझ लो! मैं कौनसे रंग का हूं 🙏
रंगों में रंग ने और रंगा ने की शुभकामनाएं 🌷👍
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" धंधा किय दोस्ती "
कौन कहां कहां नहीं जुड़ते हैं!
जुड़ते जुड़ते धंधा किय दोस्ती हो जाती हैं 👍
यह धंधा किय दोस्ती में
शिस्त -
समझ
निखालसता
और
विश्वास के साथ समझ पूर्वक लिखा हुआ कबुलातनामा - समझोता करार हो
तो शायद सब हमारे दोस्त और सभी से हमारा अनोखा रिश्ता 👍
न कभी गफलत
न कभी असंमजस
न कभी बनावट
न कभी डर
👍👍👍👍👍👍👍👍👍
हर कोई अपने मन, तन और कक्षा से अपना जीवन सुखमय जीता रहे।
चाहे वह पड़ोसी हो, विस्तार का हो, गांव का हो, देश का हो, परदेश का हो। 👍
नहीं कोई परेशानी
नहीं कोई हैरानी
नहीं कोई तकलीफ़
नहीं कोई मुसीबत
🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏
सदा सम्मिलित काम
सदा सम्मानित कक्षा
सदा सम्मिलित निर्णय
सदा सम्मिलित लाभ
न किसी को अन्याय
न किसी के साथ दुर्व्यवहार
हर कोई अपना
हर कोई हमारा
तो चलो करें शुरुआत 👍
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" अहंकार - अभिमान " कैसे अपने में जागते हैं और रचाते और उठते हैं और उदभव होते हैं?

जीवन जीते जीते - समय चलते चलते जो जो हम अपने आपको शिक्षित और सिंचित करते रहते हैं। तब जो जीवन अनुभूति - विचार उदभवीति - क्रिया सम्मिलित और संपन्नित से जो हम पाते हैं - जो हम समझते हैं - जो समझाते हैं तब एक ऐसी धारा हममें स्पंदित होती हैं जो अहंकार - अभिमान को जन्म देती हैं। यह प्रक्रिया घड़ी घड़ी, क्षण क्षण और पल पल चलते चलते हम उनमें खूपते जाते हैं - डूबते जाते हैं।

बस! यही ही जन्म प्रक्रिया हमें अहंकारी और अभिमानी में परिवर्तित करती हैं और हम न तो नष्ट कर सकते हैं। जो जीवन पर्यन्त हममें यह जन्म धरते रहते हैं।

गहराई से समझना 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं खड़ा नाथद्वारा द्वार

करुं दर्शन की गुहार

झलक दिखला दे पुष्टि शृंगार

नमन हो जाय बार बार

श्री प्रभु कहे!

हे भक्त वत्सल जीव!

मैं खड़ा अष्ट प्रहर

मेरी घड़ी घड़ी तुझे टहल

तु आजा कोई एक सवर

जीव कहे!

तेरी गली गली चहल

द्वार द्वार खड़े चौकीदार

मांगें दर्शन केरी मंजूरी

करें हम दोनों में दूरी

श्री प्रभु कहे!

हे दर्शन विरह जीव!

तुझे न लगाएं कोई जंजीर

तु दौड़ी आ मेरे तीर

मैं खड़ा हूं तेरी तस्वीर

जीव कहे!

ओहहह मेरे प्रियतम प्रेमी

निरखुं तेरी अलौकिक रीत

तुझे पाया नजर नजर तीत

स्वीकार नमन मेरे मन मीत 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हमारा देश

विभिन्नता भरा

उन्हें अभिन्न करने

एक ही उपाय है

हमारा विचार - कार्य ऐसे सिद्धांतों से घडना है - शिक्षित करना है - संस्कृत स्वीकारना है - सत्य अपनाना है जो हम शिस्तबद्ध - सत्य उपासक - विश्वसनीय - नैतिकता और नियमन पालक होना है 🙏

यह हम पा सकते है 🙏

हमारे सर्वोत्तम वेद - उपनिषद - वेदांत और श्री मद्भागवत - भाष्यों से है।

राजा - राजस्व - राज शासन से नहीं पर परिस्थिति नियमनों में घड़ी सैद्धांतिक मार्ग से होता हैं।

कहीं बार कथाएं सुनी पर कथा सिद्धांत को स्वीकार कर अपनाना हैं। हम राजा - राज्य - राजस्व और चरित्रों को ही स्वीकारना योग्य नहीं हैं।

हम कितने असंमजस में रहते हैं।

हम कितने अज्ञानता में रहते हैं।

हम कितने अंधश्रद्धा में जीते हैं।

हम कितने मान्यता से भरे हैं।

यह असमंजस, अज्ञान, अंधश्रद्धा और मान्यता की बेड़ी तोड़ेंगे तो ही हम अपना जीवन जन्म को समझ सकते हैं।

हम हमारे जीवन का सही उपयोग कर सकते हैं।

हम हमारे जीवन को समझ सकते हैं।

हम अपने आपको सुरक्षित कर सकते हैं।

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

अवश्य सोचों 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हम कैसे!

हमारी सगवडता भरा दिन उगाएं

हमारी चाहत भरी शाम जगाएं

हमारी भाती हूई बानगी पकवाएं

हमारी मनगमत कपड़े पहनाए

हमारी नजर चाहि दुनिया बनाएं

हमारी विचार मानी संसार रचाएं

हमारी मान्यता भरा जगत रचाएं

हमारी आज्ञा भरा समाज घडाएं

हम हम और हमारे

हमसे है जमाना न ज़माने से हम

चाहे कितनी सत्यता घटे तो भी यह सर न हो कलम

हम अपना स्वार्थ क्यूं छोड़ें!

नहीं हम ऐसे बेवकूफ जो हम अपना सब कुछ गंवाएं

पर न हम सत्य सिद्धांतों के लिए झुकें

यही ही है हमारी आन बान और शान

यही ही है हमारी पहचान 🌷🙏🌷

सोच लो 🙏

Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

न यह फूलों थे
न यह भंवर थे
न यह नदी थी
न यह सागर था
न यह रंग थे
न यह चमन था
तो भी मेरा तुमसे प्यार था
आज भी है
कल भी रहेगा

तु तितली हो
तो मैं फूल होगा
तु काजल हो
तो मैं नैन होगा
तु मोर हो
तो मैं मोरनी होगा
तु बादल हों
तो मैं बरसात होगा
तेरा मेरा प्यार का सिलसिला यूं ही चलता रहेगा

तु धरती हो
तो मैं आसमां होगा
तु झरना हो
तो मैं पर्वत होगा
तु नीलिमा हो
तो मैं लालिमा होगा
तेरा मेरा प्यार यूं ही खिलता रहेगा

तु गोप हो
तो मैं गोपी होगा
तु गंगा हो
तो मैं यमुना होगा
तु कान्हा हो
तो मैं राधा होगा
तेरा मेरा प्यार यूं ही थडकता रहेगा

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

તમે ગમે તેટલા લેખ લખો

તમે ગમે તેટલા પ્રવચન કરો

તમે ગમે તેટલા કીર્તન રચો

તમે ગમે તેટલા ભજન ગાઓ

તમે ગમે તેટલા રસિયા નાચો

તમે ગમે તેટલા સંગીત વગાડો

પણ

જ્યાં સુધી સેવા ના કરો તો શ્રી પ્રભુ તમારી સાથે આનંદ કેવી રીતે કરી શકે?

સેવા માં તમે શ્રી પ્રભુ ને સ્પર્શ નાં કરો તો તમને આનંદ કેમ પામો?

તમે શ્રી પ્રભુ ને તમારો આત્મીય આનંદ કેવી રીતે પમાડો?

શ્રી વલ્લભાચાર્યજી પણ આ તમામ પ્રવૃત્તિઓ કરતા કરતા પણ સેવા તો કરતા જ હતા.

તો આપણે પણ આ જ જીવન શૈલી કેમ ન અપનાવી શકીએ?

વિચારો અને અવશ્ય પોત પોતાનાં અનુભવો પુષ્ટિમાર્ગ ને નવચેતના પમાડશે 🌷🙏🌷

Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

मैं मनुष्य दु:ख हर सकु

मैं मनुष्य कष्ट निवार सकु

मैं मनुष्य तकलीफ़ मिटा सकु

मैं मनुष्य मुसीबत मोड़ सकु

मैं मनुष्य रंज छोड़ सकु

मैं मनुष्य तंद्रा तोड़ सकु

मैं मनुष्य निद्रा रोक सकु

मैं मनुष्य अज्ञान हटा सकु

मैं मनुष्य अंधश्रद्धा निर्मूल सकु

मैं मनुष्य अंधकार लुप्त सकु

मैं मनुष्य मान्यता मोड़ सकु

मैं मनुष्य राग विराग सकु

मैं मनुष्य रोग रोक सकु

मैं मनुष्य असत्य मार सकु

हां! मैं मनुष्य हर व्यसनों मुक्त कर सकु

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जो स्वर समझ सके
वह अक्षर समझ सके

जो अक्षर समझ सके
वह विचार समझ सके

जो विचार समझ सके
वह क्रिया समझ सके

जो क्रिया समझ सके
वह ज्ञान समझ सके

जो ज्ञान समझ सके
वह विज्ञान समझ सके

जो विज्ञान समझ सके
वह सिद्धांत समझ सके

जो सिद्धांत समझ सके
वह शास्त्र समझ सके

जो शास्त्र समझ सके
वह धर्म समझ सके

जो धर्म समझ सके
वह संस्कार समझ सके

जो संस्कार समझ सके
वह संस्कृति समझ सके

जो संस्कृति समझ सके
वह प्रकृति समझ सके

जो प्रकृति समझ सके
वह सृष्टि समझ सके

जो सृष्टि समझ सके
वह ब्रह्मांड समझ सके

जो ब्रह्मांड समझ सके
वह अहं ब्रह्मास्मि समझ सके

जो अहं ब्रह्मास्मि समझ सके
वह स्व आत्मा समझ सके🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" राधा राधा राधा राधा "

हे मेरी आराध्या राधा

हे मेरी प्रिया राधा

" राधा राधा राधा राधा "

" राधा राधा राधा राधा "

हे मेरी नित्या राधा

हे मेरी दिव्या राधा

" राधा राधा राधा राधा "

" राधा राधा राधा राधा "

हे मेरी कृष्णा राधा

हे मेरी कान्हा राधा

" राधा राधा राधा राधा "

" राधा राधा राधा राधा "

हे मेरी प्रेमेश्वरी राधा

हे मेरी हृदयेश्वरी राधा

" राधा राधा राधा राधा "

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तुम से प्यार हैं

तभी तो फूल खिलता हों

तुम से प्यार हैं

तभी तो तितली परवाना हैं

तुम से प्यार हैं

तभी तो नैना झुकते हैं

तुम से प्यार हैं

तभी तो अधर मधुरते हैं

तुम से प्यार हैं

तभी तो धड़कन धड़कती हैं

तुम से प्यार हैं

तभी तो दिल की रचना हैं

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

राधा यही हैं

कान्हा यही हैं

वल्लभ यही हैं

वृंदावन यही हैं

🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने विश्राम

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने विराम

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने प्रीतम

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने निकुंज

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने पंकज

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने मकरंद

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने आक्रंद

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने वंदन

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने मनन

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने स्पंदन

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने बंधन

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने रमण

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने वरण

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने शरण

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने चरण

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने प्रेमल

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने वत्सल

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने वादा

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने नाता

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने श्री राधा

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने श्री सखा

यमुना का किनारा
निभाया कन्हैया ने अवतारा

हे यमुना! वाह कन्हैया!
रास रचैया! बंसी बजैया!

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" संकल्प "

यह कोई साधारण प्रक्रिया या विचार या क्रिया या वचन या श्रद्धा या विश्वास नहीं है 🙏🌷🙏

" संकल्प "

अति बलवान - विशुद्ध - वैज्ञानिक - सैद्धांतिक और विश्वास पूर्ण - जागृत - ज्ञान प्रमाणित सिद्धि हैं।

साधारणता से मानना - समझना और गौणता से धरना हमारी अंधश्रद्धा हैं, अंधविश्वास हैं, अधूरपता हैं, अज्ञान हैं, वचन भंग हैं, अमानसिकता हैं, अस्थिरता हैं, अवमूल्यन हैं।

" संकल्प "

अति दुर्लभ और उत्तम आत्मीय पहचान हैं। संकल्प करना अर्थात हमारा आत्मविश्वास और हमारी आंतरिक उर्जा का अस्तित्व हैं। जो संकल्प करता हैं वह व्यक्ति श्रेष्ठ और पूर्णता पूर्वक हैं। संकल्प से वह अपनी उर्जा को सूर्य की तरह विशाल तेज प्रकट कर सकता हैं। अपने आपको अखंड और विजयी सार्थक कर सकता हैं।

" संकल्प " का माहात्म्य अति निर्माण भरा और सर्जन भरा हैं। संकल्प से ही सिद्धि होती हैं।

बार बार " संकल्प " करना कोई तेजस्वी और पराक्रमी व्यक्ति ही होती हैं। उनका सामर्थ्य और वीरता का प्रमाण हैं।

" संकल्प " पूर्णता की प्राथमिकता हैं। जो कोई संकल्प करता रहे - करता रहे पर स्व सामर्थ्यता उनमें न हो वह व्यक्ति सामान्य हैं - साधारण हैं - अर्ध मूल्यवान हैं।

संकल्प करना ही निश्चिंतता की प्राथमिकता हैं। पराकाष्ठा पर पहुंचने की प्रथम कड़ी हैं।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

धर्म को औषधि न समझे
धर्म को निवारण मंत्र न समझे
धर्म को परिस्थिति का उपयोग न समझे
धर्म को तकलीफों का उपाय न समझे
धर्म को पाप का प्रायश्चित न समझे
धर्म को पुण्य का उदय न समझे
धर्म को समय का परिवर्तन न समझे
धर्म को सुख का साधन न समझे
धर्म को अंधश्रद्धा का व्यापार न समझे
धर्म को मान्यता का व्यवहार न समझे
धर्म को रोग प्रतिरोधक शक्ति न समझे
धर्म को जन्म जीवन का भाग्य न समझे
धर्म को नसीब न समझे
धर्म को बाधा या मानता न समझे
धर्म को परिस्थिति परिवर्तन न समझे
धर्म को दु:ख निराकरण न समझे
धर्म को श्री प्रभु प्राप्ति का साधन न समझे
धर्म को वरदान न समझे
धर्म को समाधान न समझे
धर्म को समयबद्ध न समझे
धर्म को अर्थोपार्जन साधन न समझे
धर्म को भेंट न समझे
धर्म को दान न समझे
धर्म को व्यवस्था न समझे
धर्म को अवस्था न समझे
धर्म को संस्था न समझे
धर्म को व्यथा दूर करने का यंत्र न समझे
धर्म को भोग न समझे
धर्म को इच्छा न समझे
धर्म को यात्रा न समझे
धर्म को परिक्रमा न समझे
धर्म को आस्था न समझे
धर्म को फल न समझे
धर्म को तकदीर न समझे
धर्म को उत्सव न समझे
धर्म को मनोरंजन न समझे
धर्म को मनोरथ न समझे
धर्म को सिद्धि न समझे
धर्म को नियति न समझे
धर्म को प्रतीति न समझे
धर्म को पुण्योदय न समझे🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏
यह तो इतना गहरा सैद्धांतिक शिस्त नियमन हैं जो मन, तन, धन और जीवन को आनंदमय बनाये🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक स्थली
एक मातापिता
एक पति पत्नी
एक भाई बहन
एक पुत्र पुत्री
साथ साथ रहते हैं 🌷🙏🌷
अर्थात
एक कुटुंब में साथ साथ अनेकों आत्माएं 🙏
यह आत्माएं एक दूजे से ऐसे बंधे हैं
ऋणानुत्मक बंधन
वात्सल्य बंधन
प्रेम बंधन
आध्यात्मिक बंधन
शायद कोई एक आत्मा ब्रह्मांड में विचरण करे
तो यह विचरण करता हुआ आत्मा कुटुंब के बाकी हर आत्माओं से बंधा ही रहता हैं जबतक सभी आत्माएं एक ही धारा से जुड़े हो।
यह धारा स्व आत्मीय बल - उर्जा और ज्ञान भाव से रचाई हो।
जैसे भक्त
जैसे विशुद्ध प्रेम
भक्त में - नरसिंह मेहता, मीराबाई
प्रेम में - राधा कृष्ण, गोप गोपी,
यह ऐसी धारा हैं जो धारा
आकाश गंगा स्वरुप हो
नदी स्वरुप हो
कुटुंब स्वरुप हो
यह धारा को स्व आत्मीय उर्जा ही एक रुप करती हैं और अखंड ज्योत होते होते विशाल तेजोमय रुप धारण करती रहती हैं।
जो तेजोमय रुप धर दिया तो वह पुनः जन्म से मुक्त होता जाता हैं।
ऐसा आत्मीय विकास विचरण ही जीव विज्ञान और आध्यात्मिक एकात्मकता हैं 🌷🙏🌷
जिसका संगठन आनंद स्वरुप से ही सिद्ध होता हैं। 🌷🙏🌷
एक अनुभूति से यह स्पर्श सिमाचिन्ह दिशा हैं।
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏

સત્સંગ માં મળ્યો આપનો સાથ

અંગ અંગ પુલકિત થયું

કીર્તન માં સાંભળ્યો આપનો સાથ

મન તરંગ ખીલી ઊઠ્યાં

દર્શન માં પામ્યો આપનો સાથ

નયન ઉમંગ છલકી ગયાં

પરિક્રમા માં ઝાલ્યો આપનો સાથ

દંડવત પ્રણામ પ્હોંચી ગયાં

પુષ્ટિમાર્ગ નાં ઓ સંગાથી

આપથી વૈષ્ણવતા પામી

વારંવાર કરું આપને નમન

હે પુષ્ટિ જન સાથી 🙏

Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

गहरी बात है हमारे धामों की

किसीको बिना पैसे खाना खिला दें

तो इतनी कतारें लगेगी और सब कहेंगे प्रसाद हैं - भोजन दान हैं।

यही धाम में बिना पैसे चित्रजी या कोई पुस्तक दें

तो न कोई हाथ लगायेगा और दो हाथ जोड़ कर देखा अनदेखा कर देगा।

क्यूं?

१. पेट के लिए जीते हैं।

२. भोजन तृप्त करता हैं।

३. प्रसाद हैं तो श्री प्रभु का आशीर्वाद हैं।

४. भोजन ही सब दान में श्रेष्ठ दान हैं। - ऐसे समझते हैं बाकी सब दान इतने श्रेष्ठ नहीं हैं जितने अन्न दान हैं।

५. चित्रजी और पुस्तक को संभालना होता हैं - भोजन तो सीधा आरोगना ही हैं।

चित्रजी या पुस्तक से तृप्ता नहीं मिलती जो भोजन से मिलती हैं।

६. भोजन कोई भी करवा सकता हैं।

७. चित्रजी या पुस्तक लिखना - छपवाना या खरीद कर बांटना ही होता हैं।

८. भोजन किफायत और सरल हैं।

९. भोजन दान के लिए हर कोई साथ दे सकता हैं।

१०. ज्ञान समझना म

गहराई से सोचें तो इनमें सरल और सहज दान भोजन ही हैं।

चित्रजी या पुस्तक कोई सूचन, आज्ञा, शिक्षा वर्धक हो जो ऋची वर्धक न भी हो सके - जो भोजन सदा ऋची वर्धक ही होता हैं।

हम धाम में दर्शन और लीला प्रसाद के लिए हैं कोई ध्यान वर्धक पाना - समझने के लिए नहीं हैं।

नाम में प्रवचन, सत्संग आदि आयोजित करते हैं केवल अपने आप के लिए हैं।

सोचों 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हम आपको देखते हैं 🙏

आप हमें देखते हैं 🙏

हम एक दूजे को देख देख में

प्रेम, सत्य, विश्वास और पवित्रता आ जाये तो! 🌷

हम आपको देखते हैं 🙏

आप हमें देखते हैं 🙏

हम एक दूजे को देख देख में

निडरता, योग्यता, धन्यता और शुद्धता

आ जाये तो! 🌷

हम आपको देखते हैं 🙏

आप हमें देखते हैं 🙏

हम एक दूजे को देख देख में

आधार, संस्कार, वफादार और निराकार

आ जाये तो! 🌷

हम आपको देखते हैं 🙏

आप हमें देखते हैं 🙏

हम एक दूजे को देख देख में

साथ, नाथ, पाथ और अर्थ

आ जाये तो! 🌷

हम और आप सुख - मुख - हसमुख और प्रमुख हो जाये 🙏

जन्म - जीवन धन्य धन्य और धन्य

आनंद - परमानंद - अखंड आनंद - सर्वानंद

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे यमुना! तेरे स्मरण में तो मैं तेरा नमनीय हो गया 🙏

हे वल्लभ! तेरे स्मरण में तो मैं तेरा सेवक हो गया 🙏

हे श्री नाथजी! तेरे स्मरण में तो मैं तेरा भक्त हो गया 🙏

हे गोवर्धन! तेरे स्मरण में तो मैं तेरा परिक्रमावासी हो गया 🙏

हे पुष्टि! तेरे स्मरण में तो मैं तेरा अनुयायी हो गया 🙏

हे वैष्णव! तेरे स्मरण में तो मैं तेरा आचरणी हो गया 🙏

हे अष्टसखा! तेरे स्मरण में तो मैं तेरा दास हो गया 🙏

स्मरण - सेवा - आचरण - दासत्व से मैं पुष्टि जीव हो गया 🙏

हे वल्लभ! मेरी एक ही विनंती 🙏
मुझे ऐसे जीवों से मिला दे जो जीवों से मैं तेरा सिद्धांत मय पुष्टिमार्ग का पथ दर्शक हो रहूं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक जिज्ञासा प्रश्न है? 🙏

हम कोई यात्रा धाम जाते हैं या दर्शन करने कोई हवेली या मंदिर जाते हैं तो वहां श्री प्रभु से सनमुख होते हैं या सनमुख दर्शन करते हैं 🙏

यह सनमुख का ज्ञान भाव क्या हैं?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तुने पहनी काली आंचल

साथ है पल्लू लाल

तुने अंजना आंखों में काजल

साथ है चिपकाया बिंदी लाल कपोल

तुने पहना कंगना हाथ में लाल

साथ इशारा प्रेम का अनमोल

यही है हमारी प्रीत निशानी

हे राधा! तु है मेरी अमोल आराधना

तु ही मेरी प्रीत सांवरिया

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" सन्मुख "
सन् + मुख
सन् अर्थात सामने
सन् अर्थात समक्ष
सन् अर्थात समक्ष, उत्तम और श्रेष्ठ प्रतीति है - प्रत्यक्षता है 🙏
किसीके सन्मुख होना अर्थात स्व ज्ञान और भाव से हमारी प्रत्यक्षता है - उपस्थिति है।
जब ज्ञान और भाव की समझ की प्रत्यक्षी और उपस्थिति ऐसा परिष्कृत करती है कि हम जिसके समक्ष और प्रत्यक्ष उपस्थित हो रहे है उन्हें सत्यार्थ पहचानते है समझते है और अपने आपको भी सत्यार्थ पहचानते है समझते है तब ही हम समक्ष हो रहे है 🙏
सन्मुख दर्शन असाधारण है 🙏
सन्मुख दर्शन वही ही कर सकते है जो
१. अपने आपको शरणागत करे 🙏
२. अपने आपको समर्पण करे 🙏
३. अपने आपकी कक्षाको पहचान कर स्व समकक्षित होनेका वचनबद्ध होकर यथार्थ कार्यशील हो
हम मनमुख कक्षित जीव है, मनमुख जीव सदा ही संसार ग्रस्त है जो देह के साथ जुड़ा रहता है जिसका परिवर्तन सत्यसे समकक्षित और प्रत्यक्षी करना है तब ही हम श्री प्रभुके सन्मुख हो सकते है
आजकल जो सन्मुख दर्शन के लिए व्यापार होता है, यह पद्धति केवल व्यापार वृत्ति है जिसमें न तो सन्मुख दर्शन होता है, संकल्प होता है, वचनबद्ध होते है, न संस्कार होते है, न शरणागत होते है 🙏
हम अज्ञान से भरे और एक प्रत्यक्षता के दिखावा करके अपने आपको मुर्ख ठहराते है 🙏 श्री प्रभु न तो कोई नजर मिलाते है - न तो द्रष्टि पात करते हैं 🙏
वृंदावन विहारी आचार्य श्री राजेन्द्र जी ने योग्यता पर अपना प्रकाश प्रस्तुत किया है -
सन्मुख हम जब भी मन्दिर जाऐं और अपने इष्ट की प्रतिमा के सन्मुख खडे हों या सामने उपस्थित हो तो इसका तात्पर्य है कि *हे मेरे प्रभु जी, मेरे प्राण आराध्य मैं आपके समक्ष स्वयंको समर्पित करने आया हूँ। मुझमें मेरा "मैं पना" है ही नहीं। मैं तो सर्वतोभावेन शरणागत हूँ। आप ही मेरी संभार करने वाले हैं। इस विषय पर संत शिरोमणी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में लिखा है
सन्मुख होई जीव मोहे जब ही,
जन्मकोटि अघ नासहि तब ही।
धन्यवाद 🌷🙏🌷 आपका अभिवादन करता हूं 🙏
आपको प्रणाम करता हूं 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" वैष्णव "

नरसिंह मेहता का पद

" वैष्णव जन तो तेने कहिए

जे पीड पराई जाणे रे "

गहराई से अपने आपको और साथ साथ पूरे संसार को समझे कि

कोई है वैष्णव?

क्यूं? नहीं हैं?

अष्टसखा पढ़ते हैं - जीते नहीं है 🙏

एक एक सखा का चरित्र ऐसे सिद्धांत हैं जो पूरब पश्चिम - उत्तर दक्षिण क्या! कोई दिशा के जो भी जीवन चरित्र हैं जो हम सर्वोत्तम या सर्वोच्च माने उनके हर लक्षण - गुण - संस्कार और धर्म निभाना हमारे एक एक सखा में हैं 🌷🙏🌷

पर हमें मान्यता से - अंधश्रद्धा से - अहंकार से और स्व सिंचन बिना केवल अर्थोपार्जन का साधन बना कर समझाते हैं - शिक्षित करते हैं - धर्म परायण करते हैं 🌷🙏🌷

जो पूरा अज्ञान भरा - हरीफाई भरा - असमानता भरा और असंमजस भरा ही सिंचते हैं 🙏

जो कहीं स्वार्थ भरे पाखंड और आडंबर करके परिस्थिति का फायदा उठाकर बस कहते रहते हैं 🌷🙏🌷 और अपना अंधा समाज ऐसे अज्ञानीओं के पीछे घुमते रहते हैं 🙏

तभी तो यह समाज सृष्टि कलयुग कलयुग करके अपने आपको मूर्ख घटते रहते हैं 🌷🙏🌷 अपना निजी स्वार्थ पोषते रहते हैं 🙏

अष्ट सखा तो ऐसे चरित्रों हैं जो सबको केवल श्री कृष्णमय होना हैं 🙏

क्रमशः 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अवश्य समझना 🌷🙏🌷

" राम "
ओहहह! हर एक के मन में " राम "
ओहहह! हर एक के जीवन में " राम "

ओहहह! हर एक के नैनों में " राम "
ओहहह! हर एक के अधर पर " राम "

आनंद आनंद और आनंद भयो
राम राम से मन जीवन नैन राम
न कोई बंधन न कोई द्वेष न कोई द्वैत
हर एक के राम हर एक के राम
हर कोई समान हर कोई हमारा
न कोई जाती न कोई पर जाती
हर कोई राम हर कोई के राम
न कोई भेद न कोई अवैध
हमरे राम सबके राम सर्व के राम
नहीं रही कोई जात पात
नहीं रही कोई आत बात
सब एक हर कोई एक
राम राम के जीव ही एक
यह घड़ी से मनाये राम
हर हर में देखे राम
जन जन के साथ राम
सेवा सेवक के राम
बांधें संकल्प एक राम
राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सत्य का एक प्रकार हैं

" विश्वसनीय सत्य "

ऐसा इसलिए कह रहा हूं कि यह बात मान्यता सत्य वैचारिक सत्य से उत्तम और सत्य हैं 🌷🙏🌷

हमारी संस्कृति - शास्त्र और सनातनता वैज्ञानिक सिद्धांत आधारित हैं 🌷🙏🌷

समय, मान्यता, अधूरपता, अंधश्रद्धा और अज्ञानता ने हमें यह वैज्ञानिकता से दूर कर दिया - तोड़ दिया - नष्ट कर दिया 🌷🙏🌷

हम हमारे अध्यात्म जीवन से, संस्कृति शास्त्र से, संस्कार अधिनियमों से और प्रखर अनुभवी आत्म विश्वास से संपूर्णता से सिद्ध कर सकते हैं - यह संस्कृति, शास्त्र और संस्कार सिंचन वैज्ञानिक सिद्धांतों से ही प्रमाणित हैं 🌷🙏🌷

हम कहींओ की बातें, विचारों, अपूर्ण निति नियमों को समझ समझ कर अपने आपको वैज्ञानिक सत्य से विमुख करते करते जीवन असंमजस, मान्यता के दौर से हम सत्य से अधिक दूर हैं और दूर होते जाने से हम विचलित हो कर हम मान्यता और अंधविश्वास में लिपटाते जाते हैं 🌷🙏🌷

" क्रमशः "

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" नंद महोत्सव "

हे जिज्ञासु मन!

" हमारे मन कृष्ण कब पधारते हैं? "

" कृष्ण " ऐसे कैसे हैं जो हमारे यहां पधारते हैं?

" हमारे मन को ऐसा क्या हुआ कि वह जिज्ञासा करने लगा कि " श्री कृष्ण " हमारे मन पधारे? "

" श्री कृष्ण " को पधारना अर्थात " श्री कृष्ण " को हमारा स्मरण होना - " श्री कृष्ण " को हमारा स्मरण कैसे आये? "

भाव करने से - तो मन में ' श्री कृष्ण पधारते हैं ' पर ज्ञान और आनंद से पधारे - सिद्धांत और नित्य से पधारे तो मन की जिज्ञासा को समर्थन मिले। 🌷🙏🌷

हे अभिव्यक्त पुरुषार्थ जन! मेरी आपको प्रार्थना है 🙏

आप हमें अपनी स्पर्श पद्धति से हमें कृतार्थ करे 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

દયા, દાન, ઉપકાર, સેવા, મદદ, સાથ એટલે પોતે પોતાની જાતે જ લૂંટાયા ડૂબ્યા મૂર્ખ બન્યા છેતરાયા 🌷🙏🌷

કેટલી ઊંચી વિશ્વાસી પ્રતિક્રિયા 🌷🙏🌷

આજની આ ઉત્તમતા ને સદા જાગૃત રાખો - કરો

એજ દયા છે

એજ દાન છે

એજ ઉપકાર છે

એજ સેવા છે

એજ સાથ છે

" જય રામ જી " 🌷🙏🌷

Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

आसमां हमारा प्यार जताये

धरती हमारी उल्फत लुटाये

सागर हमारा प्यार बरसाये

नदी हमारी प्रीत बहाये

जन्मों जन्म से यह सिलसिला यूं ही चलता जाये

आज तुम कहीं हो आज मैं कहीं हूं

पर

यह प्यार सदा होगा रहेगा

सूरज बार बार डूबे

चंद्र बार बार खिले

हमारा सवेरा हर रोज होगा

हमारी सांझ हर रोज होगी

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

इसलिए तुम सदा " राधा " हो

चाहे कहीं रुप धरे कान्हा आये

तेरा श्याम तो तुझमें ही बसा है

🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

हे प्रिये!

तुममें क्या नहीं है?

तेरी जुल्फों मेरे प्यार की छाया है

तेरे नैना मेरे प्यार की द्रष्टि है

तेरे अधर मेरे प्यार के फूल है

तेरे कर्ण मेरे प्यार की कुंजियां है

तेरे बाजूएं मेरे प्यार के झूले है

तेरे अंगना मेरे प्यार की झील है

तेरे चरण मेरे प्यार की पूजा है

तेरे शृंगार मेरे प्यार की उर्मि है

हे प्रियतम! तु कहे

तु क्या क्या मेरे प्यार के लिए 🌷

राधा है

राधे है

श्यामा है

सांवरी है

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

Vibrant Pushti "

" जय श्री राधा " 🌷 🙏 🌷

यह कैसी असर है

यह कैसी डगर है

एक सांस मिली

बस आग ही आग है

यूं ही सुलगते सुलगते

यह नैना तरसे

यह मनवा तड़पे

यह तन थरथरे

यह आत्मा जले

न दिल थामे न थामे

न धड़कन धडक धड़के

बस

एक ही ख्याल एक ही याद

राधा राधा राधा राधा राधा

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक विद्यार्थी ने एक प्रश्न पूछा

हम हिन्दुस्तानी को सुखी और धनाढ्य जीवन जीने के लिए

१. भगवान की भक्ति करके उनकी कृपा पानी🙏

२. हर व्यवहार में श्री प्रभु को साक्षी रखना

३. हर बार हम पर विश्वास रखे हम कभी दूसरे की तरह गलत नहीं करते

४. हम हमारी मेहनत से ही जीते हैं - न किसीकी दया या मोहताज नहीं हैं

५. हमारा हर कार्य शुद्ध, पवित्र और विश्वसनीय ही होता हैं

६. हम हररोज सेवा प्रार्थना दर्शन करते हैं

७. हम सदा समाज से सत्संग से ही जुड़े रहते हैं

८. न कभी झूठ बोलना, असत्य कार्य करना, किसीके साथ बदसलूकी करना हमारा जीवन नहीं हैं

९. हम सदा सबका भला और अच्छा ही इच्छते हैं

१०. हम धर्म पालन में कुशल और निष्ठावान हैं

११. न आडंबर न ऊंच-नीच न भेदभाव न कपट न दुष्टता न द्वेष करते हैं

१२. सदा सदाचार - संस्कारी जीवन जीना

ओहहह! 🙏

कितने महान और संस्कारित उच्च कक्षित व्यक्तित्व है यह हर हिन्दुस्तानीओ का - गर्व है ऐसे जीनेवालों पर जो सारी दुनिया में सभ्यता भरें और संस्कृत जीवन जीने वाले हैं🙏 🌷 🙏 🌷 🙏

वाह! 🌷 🙏 🌷

चलो सोचते हैं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

" यमुना " 🌷 🙏 🌷

हमारी संस्कृति में और हमारे इतिहास में " गंगा - यमुना "

मूलभूत आचार्यों ने बार बार स्पर्श करवाया। वह खुद उनके ही सानिध्य में अपना आध्यात्मिक जगाते थे।

इसका अर्थ यह हुआ कि यह दोनों सरिता या धारा को अवतरण में प्रज्वलित किया हैं।🙏

इनकी बूंद - इनकी लहर - इनकी धारा - इनका एकात्म होना कोई असाधारणता हैं। जो हमें अवश्य जाननी और पहचाननी चाहिए अगर हमें आध्यात्म पाना है - होना हैं - दासत्व पाना हैं - मुक्त होना हैं या परब्रहम में लीन होना हैं।

यह आचार्यों एक एक बूंद - लहर और धारा से जुडे थे। तब ही वह अपने आपको कक्षित - रक्षित और शिक्षित पाया 🙏

हम आडंबर, अंधश्रद्धा और अज्ञानता से यह सरिताओं को ऐसे ही छोड़ दें तो हमारा स्व आध्यात्म नष्ट हो जाता हैं।

हम चाहे कितने ही उनका स्मरण पाठ, पूजा और गुणगान कर लें।

हमारा संस्कार, व्यवहार और आचार इनसे जुड़े हैं। हम इन्हें नहीं समझेंगे तो हम कुछ नहीं हो सकते - एक साधारण सा जीव बस जी गया चाहें कितनी भी भौतिकता का मालिक हो।

सोच लो! 🌷 🙏 🌷

Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

कौन नहीं अपना!
एक ही धरती
एक ही आसमां
एक ही सूर्य
एक ही चंद्र
एक ही सागर
एक ही हवा
एक ही परमात्मा
स्व मन से हमने कर दिया विभाजन
मेरा मेरा मेरा मेरा
मेरा मेरा में
धरती गंवाई
आसमां गंवाया
सागर गंवाया
हवा गंवाई
परमात्मा गंवाया
हम मन मनुष्य से मुमुक्षु देवता
हम तन तपस्या से तनुनवत्व आत्मा
हम धन धान्य से धार्मिक दाता
तो भी भिन्न विभिन्न विचार वर्तता
इतना तोड़ा - इतना छोडा इतना लुटा
न कोई किसीका न कोई अपना
अवश्य सुनो 🌷🙏🌷
हर कोई सत्य
हर कोई श्रेष्ठ
हर कोई उच्च
हर कोई धनवान
तो भी हर कोई परेशान!
क्यूं!
छोड़ो यह तोड़ना 🙏
छोड़ो यह लुटना 🙏
छोड़ो यह मारना 🙏
सबकुछ हमारा ही है तो साथ साथ आनंद आनंद आनंद महकाना 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आज जो उम्र पर हम है, गौर करे हम कहां हैं?

हमारी पास धन दौलत, अमीरी खेत खलियान जो मन चाहा है वह है 👍

कुटुंब में साथ साथ आन बान और शान से जीते हैं 🙏

धर्म धारणा पारायण में डूबे हैं 🙏

मान सम्मान पाते हैं - मिलते हैं और बस कहते रहते हैं

श्री प्रभु की कृपा - मातापिता का आशीर्वाद और हर एक का स्नेह और साथ 👍

वाह! 🌷🙏🌷

उम्र उम्र का काम करता है

नसीब नसीब का काम करता है

भाग्य भाग्य का काम करता है

दयालु परमात्मा दया की कृपा बरसाता है

अति उत्तम 🌷🙏🌷

कौन कहता रहता हैं? हर कोई 🙏

हमारा मन, तन, धन और जीवन श्रेष्ठ श्रेष्ठ और श्रेष्ठ

आपको हमारा प्रणाम 🙏

यही कक्षा - यही रक्षा और यही शिक्षा सबको मिले तो! 🌷🙏🌷

सोचना! अवश्य सोचना! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

डगर डगर
कदम कदम
साथ साथ
पास पास
अपने पराये
दूर नजदीक के
बार बार स्मरण कराये
बार बार सत्संग कराये
बार बार संस्कार समझाये
बार बार जीना सिखाये
बार बार कुछ कुछ समझाये
बार बार कुछ पाये
सच! अजब गजब का है संसार
कहते कहते रहते हैं
सुनते सुनते रहते हैं
बोलते डोलते रहते हैं
जैसा भगवान रख्खे ऐसे रहते हैं।
धर्म कभी भी किसीको कष्ट नहीं देता
धर्म कभी किसीको हैरान नहीं करता
धर्म कभी किसीको दु:खी नहीं करता
धर्म कभी किसीको तकलीफ़ नहीं देता
हम मतवाले
हम अंधश्रद्धा वाले
खुद से खुद का दु:ख रचे
खुद से खुद का कष्ट बांधे
खुद से खुद की तकलीफ़ भरे
और दोष दें भगवान को
और दोष दें जन्म देने वाले को
गजब हैं यह संसार के मानव
गजब हैं यह जगत के मानव
गजब हैं यह दुनिया के मानव
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
जो संभलें तो हम ऐसे
जो संभलें तो तुम ऐसे
हे प्रभु! 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक वैज्ञानिक था, उन्होंने अपने आपको टटोलना शुरू किया - जैसे उठते ही वह अपने नैनों से जो भी देखता था और उनके जीवन में उसकी क्या असर होती थी और यही असर से वह कैसे जी रहा होता हैं वह लिखता रहता था।

अनेकों दिन बीत गए, वह ऐसे ही बैठा था और उनके हाथ वह डायरी लगी। वह तारीख आधारित पढ़ने लगा तो वह इतना अचंभित हो गया की क्या मैं ऐसा हूं!

जो स्नातकता - जो संस्कार - जो शिक्षा और जो उनकी नित्य क्रियाओं थी उनमें कहीं जीवन व्ययता उन्होंने तय किए सिद्धांत और नीति विरुद्ध थे। वह सोचने लगा - ऐसा कैसे?

मैं तो सत्याग्रही तो इतना आडंबर कैसा!

मैं तो सैद्धांतिक तो इतना बेदरकार कैसा!

मैं इतना स्वच्छंदी तो इतना अस्वच्छ कितना!

मैं इतना दयालु तो इतना अहंकारी कैसा!

मैं इतना निर्मोही तो इतना लालची कितना!

मैं इतना परोपकारी तो इतना स्वार्थी कैसा!

मैं इतना धर्म परायण तो इतना अधर्मी कैसा!

ओहहह!

मेरे मित्रों! यह सत्य है 🙏

नहीं तो आज हमारी दुनिया - हमारा जगत - हमारा संसार और हमारा जीवन अज्ञानी, अहंकारी, आडंबरी, अंधश्रद्धा भरा और अधंकार भरा नहीं होता 🙏

हम धन दौलत - अमीर गरीब - अधर्म - और कहीं तफावतों में नहीं फिसलते 🙏

हम काया माया में नहीं बंधते 🙏

माफ़ करना 🌷🙏🌷

यह तो एक उर्जा जागी वह प्रज्वलित करने की कोशिश करता हूं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" कान्हा " न तु मुझसे रुठे न मैं तुझसे रुठु

" कान्हा " न तु मुझसे बिगडे न मैं तुमसे बिगडु

" कान्हा " न तु मुझसे खफा न मैं तुझसे खफा

" कान्हा " न तु मुझसे तन्हा न मैं तुमसे तन्हा

" कान्हा " न तुमसे छुपे न मैं तुमसे छुपा

" कान्हा " न तुमसे अलग न मैं तुमसे अलग

" कान्हा " मुझे पता है तु मुझसे कितना प्यार करे!

पर मुझे इतना अवश्य पता हैं मैं तुमसे कितना प्यार करुं!

" कान्हा " मुझे पता है तु मुझसे कितना तरसता है!

पर मुझे पता है मैं तुम्हारे लिए कितना तरसता हूं!

" कान्हा " मुझे पता है तु मेरा कितना ख्याल करें!

पर मुझे पता है मैं तुम्हारे लिए कितने ख्यालों में खोया हूं!

मेरा दिल ही एक ऐसी स्थली है जहां तु चैन से ठहर सके 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्याम ने पुकारा श्याम ने बंसी बजाया

सूर सूर ऐसा छेड़ा सुना वह तड़पाया

कोई कहें मुझे पुकारा कोई कहें श्यामा

कोई कहें हम गोपियां कोई कहें प्रिया

सूरदास कहें श्याम उन्हें पुकारा जिसमें बसे राधा 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जहां नजर उठती हैं वहां ऐसा विज्ञापन दिखता हैं - आज यहां श्री मद भागवत कथा है - आज यहां अष्टसखा चरित्र प्रवचन हैं - आज यहां श्री नाथजी प्राकट्य चरित्र लीला हैं - आज यहां श्री चौरासी कोस व्रज यात्रा का रजिस्ट्रेशन है 🌷🙏🌷

हर कोई कोई न कोई सत्संग, प्रवचन, कथा या यात्रा में डूबा रहता हैं।

तब मन में एक ख्याल उठा - क्या यही जीवन का लक्ष्य हैं जो सदा यही में डूबा रहना या यही से कुछ पा कर कुछ स्व में जगाना और जीवन को योग्य और मधुर करना?

हर रोज दर्शन करने पहुंचते बस यही ही देखना और ऐसी वैसी बातें कह कर सुन कर अपने व्यवसाय में खो जाना।

ऐसा दिन दिन - वर्ष वर्ष - दशक दशक और आखिर जीवन पर्यन्त 🙏

यही यापन से देखा समाज बस ऐसे ही जी रहा हैं और मैं यही समाज का सभ्य मैं भी ऐसे ही जीवन पर्यन्त निभा रहा हूं।

पर एक दिन एक ऐसी घटना घटी और मैं झग जगा गया, मुझे यही दर्शन करते मुझे किसीने टटोला - ओय! क्या करता रहता हैं? तु हर रोज मुझे मिलने आता हैं तो तुझे मेरा संकेत या कोई द्रष्टि लीला तुझे कुछ कहती नहीं हैं?

मैं अचंभित रह गया! और अपने मन और द्रष्टि को बटोर कर झांकने लगा - तो समझ आया की मुझे ऐसे ही मानव समुदाय और समाज के लिए " सैद्धांतिक और व्यावहारिक समझ से सेवा में डूबना हैं " न कोई व्यवहार - न कोई अर्थोपार्जन अपेक्षा - न कोई संगत 🙏

बस! जो कौटुंबिक हैं यही से सेवा अर्चना अर्पण करते जाना।

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

यही करते करते जो जो निकटता - स्पर्शता और जागृतता जागी इनमें " श्री वल्लभाचार्य चरित्र " का सत्संग पाया 🙏 मन दौड़ने लगा, तन थिरकने लगा और आत्मा विचलित होने लगा। देह साधन और कौटुंबिक साथ और श्री पुष्टि मार्ग समाज ने मुझे कदम भरने के लिए ऐसी भूमिका तैयार करने लगी की बस चारों ओर -

श्री अष्टसखा

श्री वल्लभ 🙏

श्री यमुना 🙏

श्री गिरिराज 🙏

और

श्री श्रीनाथजी 🙏

क्रमशः 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कान्हा! मैं एक अधूरा

हे कान्हा! मैं एक अज्ञानी

हे कान्हा! मैं एक अहंकारी

हे कान्हा! मैं एक अभिमानी

हे कान्हा! मैं एक विरही

हे कान्हा! मैं एक अतृप्ति

हे कान्हा! मैं एक त्रासदी

हे कान्हा! मैं एक घृणास्पद

हे कान्हा! मैं एक अनपढ़

हे कान्हा! मैं एक..........

मुझसे तु दूर या तुमसे मैं दूर

नहीं नहीं नहीं नहीं

दूर दूरी की रीत नहीं

अधूरी अझूरी सी प्रीत नहीं

तु मेरा मैं तेरी यही माने जीया

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" वल्लभ! वल्लभ! वल्लभ! वल्लभ! "

बार बार सुना बार बार सुने

बार बार गाया बार बार गाये

बार बार कहा बार बार कहे

बार बार स्मरा बार बार स्मरे

क्यूं? नाम स्मरण सूर और तरंग में जो स्पंदन जागते हैं - स्फूरते है - उठते हैं 🙏 अदभुत! 🌷

हमारे नैन - हमारा मन - हमारी श्वासे - हमारी धड़कन कितनी शांत और एक लय में घुटती हैं।

ऐसा क्यूं?

क्यूंकि हमने श्री वल्लभ के समाज में जन्म धरा है। हमने श्री वल्लभ चरित्र को छुने का विश्वास भरा पुरुषार्थ किया हैं। हम श्री वल्लभ की रचनाओं को छु कर समझने की कोशिश कर रहे हैं। हम श्री वल्लभ के सानिध्य पाने के लिए उत्सुक हैं। हमारा मन उनकी ओर आकर्षित होता जा रहा हैं। हम श्री वल्लभ के बताए मार्ग और सिद्धांत पर जीवन व्यापन की कोशिश कर रहे हैं।

ओहहह!

यह श्री वल्लभ का चरित्र - दर्शन और सत्संग हममें आमूल परिवर्तन कर रहा हैं जिससे हममें अदभुत स्पंदन जागते हैं। 🌷🙏🌷

" श्री वल्लभ प्राकट्य " संप्रदाय जो चारित्र्य करें पर उनका प्राकट्य अनेकों संकेत और वैज्ञानिक सिद्धांत सिद्ध करते हैं। 🙏

क्रमशः

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक साहित्यकार था। वह साहित्य में ऐसा निपुण था की हर अक्षर और शब्द का व्याकरण अर्थ के साथ अर्थपूर्ण व्याख्या करता था। उनके हाथ षोडश ग्रंथ लगा और जैसे उन्होंने यह पढ़ा " मुरारी पद पंकज सफूरदमन्द रेणुत्कटाम "

अरे! यह कैसी लिखावट? ऐसा कैसे कह सकते हैं?

मुरारी पद पंकज - मुरारी के पद पंकज जैसे है।

मुरारी पद पंकज स्फूरदमन्द - मुरारी के पंकज जैसे पद से दमन्द स्फूरे।

मुरारी पद पंकज स्फूरदमन्द रेणुत्कटाम - मुरारी के पंकज जैसे पद से उत्कट रेणु दमन्द से स्फूरे।

वह सोचता ही रहा - सोचता ही रहा और अपने मन मनस्का और तन तनस्का से वह व्याकरण अर्थ करता करता अपने आपको मुरारीमय कर दिया। जो भी कुछ करता तो साथ साथ यह भी उच्चारता - " मुरारी पद पंकज स्फूरदमन्द रेणुत्कटाम "

ऐसी मशगुलता में वह डूब गया तब उनके नैनों में से बूंद बूंद बरसने लगा, बरसते बूंदों से वह अपने आपको भिगोने लगा, भिगते भिगते वह इतना भिग गया की उनका हर अंग भिग गया। पूरा बदन शीतल हो गया - कण कण से मधुर महक उठने लगी, मन शांत और स्थिर हो गया।

तब उनके चैतन्य नैनों को संकेत मिला - हे उत्कट रेणुओं से स्फूरे विरह नैनों अपनी पुष्टि दिव्य द्रष्टि से देखो 🙏

साहित्यकार ने अपने मूंदे नैनों को धीरे धीरे खोला तो सामने पाया " मुरारी पद पंकज " 🌷🙏🌷

वह अचंभित रह गया और इतनी उत्कट आनंद की अनुभूति पाने लगा की वह

बार बार स्मरण करने लगा उस रचनाकार का जिसने यह पंक्ति की रचना की थी - उनका हृदय आत्मा से बार बार नमन करके उनका धन्यवाद करता था। उनकी संपूर्ण एकात्मकता प्रार्थना करता था - जिसने यह रचना रची है उसका मुझे साक्षात्कार हो। 🙏

तब ही एक बैठकजी पर बिराजे श्री वल्लभाचार्य का दर्शन उन्हें हुए 🌷🙏🌷

वह पुकार उठा - हे वल्लभ! हे वल्लभ! आपकी कृपा 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह एक वैज्ञानिक सिद्धांत है

" जो मन जो माने वही वह मानव स्वभाव का है। "

हम विज्ञान के सिद्धांतों को मानते हैं तो हम अवश्य वही सिद्धांतों आधारित ही सबकुछ करेंगे। चाहे उनके साथ साथ - इस पास - आचार व्यवहार कैसे भी विषयों का हो। वह वही सिद्धांतों से ही अपना आचार व्यवहार करेगा।

पर

जो उन्हें डरा कर - जबरदस्ती कर - गैर मार्ग दोर कर हम मजबूर करेंगे तो वह कमजोर हो कर तथ्यों हीन जीवन जीयेगा। 🙏

हमारा भारत - हमारा हिन्दुस्तान ऐसा है 🌷🙏🌷

अकेले बैठकर सोचो या साथ साथ सोचो

अब हमें इनमें परिवर्तन करना है

जो प्रथम स्व स्वीकार और अपनाने से ही आयेगा 🌷🙏🌷

तो शुरू करे 👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक साधु था जो दिन रात सदा श्री प्रभु भजन और सत्संग में लीन रहता था और सदा श्री कल्याणरायजी हवेली पर मंगला से गौचारण या ग्वाल के दर्शन तक फल बेच कर अपना जीवन निर्वाह करता रहता था।
कभी किसीको कोई भी प्रकार की तकलीफ़ हो तो सेवा करके अपने श्री प्रभु स्मरण में मग्न रहता था। ऐसे ऐसे कहीं बरसों बीत गए और वह जीवन के आखरी पड़ाव पर जा पहुंचा।
वह अपना नित्य पुरुषार्थ निभाता और आनंदमय जीवन बिताता था। एक दिन एक दर्शनार्थी ने हंसते हंसते पूछ लिया - हे साधुदास! आप इतने बुजुर्ग हो गये हो और कहीं वर्षों से अपना जीवन यही स्थली पर बिताए तो क्या आपको कभी श्री प्रभु दर्शन हुए?
वह साधु प्रश्नोक्त व्यक्ति की ओर एक नजर से देखते और दो हाथों से नमन कर विनम्रतापूर्वक कहा - हां! मैंने श्री प्रभु के अवश्य दर्शन किए हैं 🙏
वह प्रश्नोक्त व्यक्ति अचंभित हो कर दूसरा प्रश्न पूछा - वह कैसा है?
साधुजी ने फिर से प्रणाम करके कहा - बिल्कुल हर्षोल्लासी 🙏
मधुर वदनं - मधुर हृदयं - मधुर रुपं - मधुर करुणं - मधुराधिपते रखिलं मधुरं 🙏
व्यक्ति अत्यंत भावविभोर हो गया और एक और प्रश्न पूछ डाला - कहां दर्शन में मिले थे?
साधुजी के नैनों से पुष्टि करुणा बहने लगी - मुखड़ा तेजोमय हो गया और अति संभाल कर कहा - मुझे दर्शन दिए यह हवेली के द्वार पर 🙏
व्यक्ति सहमा उठा और अपने आपको अति घिनौना समझ कर साधु को प्रणाम कर चल दिया। वह मन से - तन से और समय से बैचैन हुए अपने आपको अत्यंत निम्न समझ कर दु:ख भरे चेहरा से खिसक गया।
दूसरे दिन फिर वह मंगला दर्शन में भेंट हुई - वही चेहरा - वही भाव और वही ही गति से चला गया। ऐसे दिन पर दिन बीत गए।
एक सुबह फिर वह व्यक्ति साधुजी के सामने खड़ा हो गया और प्रणाम करके पूछा - हे साधुजी! मैं करीब पचास वर्ष से यह हवेली मंगला दर्शन के लिए अचूक रहता हूं और सदा विशुद्ध विश्वसनीय जीवन निर्वाह में डूबा संसार में जीता हूं साथ साथ एक आश लगाए फिरता रहता हूं - मुझे दर्शन होंगे - मुझे स्वीकार करेंगे 🙏
पर न कोई संकेत - न कोई स्पंदन - न कोई समय सूचकता। बस एक ही समय धारा बहती है - बहती है और बहती है 🌷🙏🌷
आप मुझे कोई मार्गदर्शन दो तो मैं भी कुछ झांकी पाऊं 🙏
जो साधुजी ने कल वह दर्शनार्थी व्यक्ति की प्रार्थना सुनकर और उनकी जिज्ञासा भरी तीव्रता देखकर उन्होंने एक ऐसी भूमिका रची - हर रोज वह दर्शनार्थी को सामने " जय श्री कृष्ण " कह कर उन्हें वंदन करने लगे। एक दिन के बाद दूसरे दिन और दिन ब दिन वह " जय श्री कृष्ण " और वंदन से इतना व्यथित और लज्जित कर दिया की वह व्यक्ति के अंदर वेदना और संताप जागने लगा।
वेदना उन्हें एक भक्त साधु मुझे बार बार " जय श्री कृष्ण " और वंदन करे - मुझमें इतनी तो क्या महत्ता है? वह लज्जित और सहमा सहमा रहता था।
संताप इसलिए उठता था की मैं कैसा देहधारी आत्मा हूं जो मुझे श्री प्रभु का संकेत या झांकी भी नहीं होती हैं!

दिन पर दिन बीतने लगे एक दिन दर्शनार्थी जैसे श्री कल्याणरायजी हवेली पहुंचा और प्रथम वह साधु जी को " जय श्री कृष्ण " कह कर वंदन किया 🙏
साधु जी पुलकित हो उठे और नाचते नाचते कहने लगे
भाई! तुम श्री वल्लभ के निकट पहुंच रहे हो 🙏
आज मेरा प्रयत्न सफल रहा की तुम जब भी हवेली में दर्शन करने आते हर व्यक्ति में श्री प्रभु का दर्शन नहीं देख सकते हो तो तुम्हें बिराजमान श्री प्रभु के संकेत और स्पंदन कैसे पा सकोगे! आज तुमने जो मुझे " जय श्री कृष्ण " के साथ वंदन किये 🙏
यही प्राथमिक संकेत है श्री प्रभु दर्शन का 🙏
दर्शनार्थी व्यक्ति आनंदमय हो कर वह भक्त के चरण पकड़ लिए, वह अभिमान रहीत अहंकार विहिन हो गया। आज उन्होंने पुष्टि मार्ग का " दासत्व " का सिद्धांत पाया 🙏
जैसे गर्भगृह में पहुंचा और श्री प्रभु विग्रह का दर्शन किया तो उन्हें कुछ अजब सी अनुभूति हूई। उनके नैनों स्थिर और अपलक श्री प्रभु को निहार रहे थे। तन मन में स्पंदन उठ रहे थे।
दर्शन की पूर्णता तक वह वहां का वातावरण में डूबा रहा, जैसे टहल हूई वह बाहर आते ही श्री साधु भक्त को लिपट गया। आज उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था।
श्री साधु भक्त ने कहा - भाई! यही ही प्रारंभिक लीला है पुष्टि प्रणय की 🙏
धीरे धीरे यह रीति में डूबते रहो 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" जय श्री कृष्ण " " जय श्री कृष्ण "

मन और नयन पटल पर जब स्फूरते हैं तब हमारी आत्मा को ऐसे स्पंदन स्पर्श होते हैं जो उन्हें अधिक तेजोमय करता हैं।

यह अनुभूति श्री वल्लभ को प्रथम मिलन श्री श्रीनाथजी से गोवर्धन पर्वत पर हूई 🌷🙏🌷

वह जैसे जैसे श्री श्रीनाथजी के प्राकट्य स्थली पर पहुंचे, मन और नयन द्रष्टि का मिलन हुआ - श्री नाथजी पुकार उठे - वल्लभ!

श्री वल्लभ शरणागति से नमन करके अति हर्षोल्लास से पुकार उठे - " जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

और दोनों का प्रगाढ़ मिलन 🙏

आध्यात्म आत्मा का परमात्मा से एकात्म 🌷🙏🌷

पुष्टि मार्ग का प्राथमिक सिद्धांत - जो स्व आत्मा को, स्व मन को, स्व तन को और स्व जीवन को सदा श्री कृष्णमय में डूबोते रहे तो अवश्य प्रथम मिलन की लीला प्रकट हो 🌷🙏🌷

" जहां जहां मन दौड़े वहां मुझे मेरा कान्हा दिशे "

" जहां जहां मेरा नयन पहुंचे वहां वहां मेरा वल्लभ प्रक्टे "

तो स्व जन्म जीवन पुष्टि संस्कार सिंचे

तो स्व संसार पुष्टि संस्कृति से मधुर बने

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हे वल्लभ! आपने अपने प्रथम मिलन से ही हमें जता दिया की ' अपने ह्रदय में श्री कृष्ण बिराजें

यही श्री कृष्ण हर हर में निहाले

तो " जय श्री कृष्ण " " जय श्री कृष्ण "

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्यार देह भी है

प्यार महक भी है

प्यार वचन भी है

प्यार आत्मा भी है

प्यार जन्म जन्मांतर का बंधन भी है

प्यार नैनों का एकरार हैं

प्यार सांसों का गुल जाना हैं

प्यार देह से सदेह होना हैं

प्यार विश्वसनीय वचन है

प्यार आत्मा से परमात्मा पवित्र पहचान हैं

प्यार की द्रष्टि अपलक हैं

प्यार की उर्जा प्रजवल्लित हैं

प्यार का देह विशुद्ध हैं

प्यार का वचन अतूट हैं

प्यार का आत्मा पुरुषोत्तम हैं

प्यार का परमात्मा आनंद हैं

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कान्हा!

तुम यह नैनों से दूर हो कर दिखाओ तो जाने तुम कितने छलिये हो 🌷

हे कान्हा!

तुम यह मन से बिछड़ कर दिखाओ तो जाने तुम कितने मनचले हो 🌷

हे कान्हा!

तुम यह तन से तुट कर दिखाओ तो जाने तुम कितने तपस्वी हो 🌷

हे कान्हा!

तुम यह धन से लुट कर दिखाओ तो जाने तुम कितने ज्ञानी हो 🌷

हे कान्हा!

तुम यह जीवन से छुट कर दिखाओ तो जाने तुम कितने प्रेमी हो 🌷

कान्हा! तुम छलिये

कान्हा! तुम मनचले

कान्हा! तुम तपस्वी

कान्हा! तुम ज्ञानी

कान्हा! तुम प्रेमी

तो मैं भी तुम्हारा दास हूं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कान्हा!

मैं तुम्हारी हूं तुम मेरी मांग में व्रज रज भर दो 🙏

मैं तुम्हारी हूं तुम मेरे मन में नाम स्मरण भर दो 🙏

मैं तुम्हारी हूं तुम मेरे तन में विरह आग भर दो 🙏

मैं तुम्हारी हूं तुम मेरे जीवन में पुष्टि पुरुषार्थ भर दो 🙏

मैं तुम्हारी हूं तुम मेरे नैनों में लीला चरित्र भर दो 🙏

कान्हा! सिर्फ तुम्हारी 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक स्त्री है जो नित्य नूतन श्री प्रभु स्मरण में रहे। उनकी हर प्रवृत्ति में वह रीति - कृति पूर्व और पूर्ण " श्री वल्लभ " ऐसा उच्चारण उनके मुख से अनायास निकल पड़े।
गृहकार्य में भोजन, जल, सब्जी, आदि तैयार होते ही " श्री वल्लभ " 🙏
अपने धंधा किय कार्य में - ओफिस वर्क हो या उत्पादीय काम हो - सलाह सूचन हो - आदि उनके मुख से निकल ही आये " श्री वल्लभ " 🙏
एक रात वह अपनी पथारी में दिनचर्या के मनन में पड़ी रही थी तो सोचते सोचते वह कहीं बार " श्री वल्लभ " श्री वल्लभ " ऐसा सहसा निकल रहा था। तब ही उनके मानस पटल पर यह क्रिया आई - अरे मैं यह " श्री वल्लभ श्री वल्लभ " कैसे उच्चारित करती रहती हूं! और इससे मुझे आंतर आनंद और शांति अनायास से अनुभव करती हूं 🙏
मुस्कुराती आनंदमय हो कर वह अपने आप में खो जाती हैं।
बार बार हर रोज ऐसे डूबते डूबते वह आसपास के वातावरण और कौटुंबिक जनों को भी वह खुश रखती हैं।
उनके साथी और संबंधी भी उनसे सुखी और संतुष्ट रहते थे और उनकी हर प्रवृत्ति में उत्साहित थे।
हर कोई वह स्त्री के बारे में ऐसा ही सोचता था - सदा आनंद भरी, सदा काम में उत्सुक, सदा मृदु वचन, सदा आचारी, प्रमाणिक और विश्वसनीय 🙏
न रोग - भोग और कष्ट 🙏
हर व्यवहार शुद्ध और पवित्र
हर वृत्ति निखालस और मददगार
धीरे धीरे हर कोई उन्हें " श्री वल्लभ " श्री वल्लभ " कहने लगे और करने लगे। 🙏 सन्मान और आदर हर कोई देते और निभाते थे।
समाज के जीवन चक्र आधारित एक दिन एक व्यक्ति उनके पास आयी और उन्होंने ने ऐसी उलझन स्त्री को बताई की वह स्त्री के मुख से बार बार निकल गया - " श्री वल्लभ " श्री वल्लभ "! वह सहमा गई, वह गभरा गई, वह डर गई 🙏
घड़ी घड़ी - " श्री वल्लभ श्री वल्लभ " ऐसा पुकारने लगी। वह श्री वल्लभ को बार बार विनंती करके कह रही थी - श्री वल्लभ अब तु ही संभालना 🙏
जागतिक विडंबना को तो श्री प्रभु खुद नहीं बचे थे तो यह एक स्त्री!
लोक चर्चा का व्यभिचार से कौन नहीं फंसता है! बस यही व्यभिचार में वह स्त्री को फंसा दी।
समय समय और स्व कुशलता से यह स्त्री ने अपने को श्री वल्लभ की प्रेरणा और विश्वास से ऐसा मुक्त किया 🌷🙏🌷 की हर कोई कहने लगे - " श्री वल्लभ श्री वल्लभ "
क्रमशः - कल कहूंगा कैसे निपटाया जागतिक विडंबना भरा व्यभिचार 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" पतंग "
प - प्रिये
तं - तु ही
ग - गति

प - प्रेम
तं - तेरी ही
ग - गली

प - पूर्ण
तं - तादात्म्य
ग - गूंज

प - पुष्टि
तं - तृष्णा
ग - गोपि
हां! है कुछ पतंग
है कुछ डोर
जो एक आसमां को छुने अपने आपको डोर के हवाले कर जैसे जीआएं ऐसे आखरी सांस तक जीती है अपना सर्वस्व सोंप कर
अपने आपको एक ऐसी समय की धारा में शामिल करती हैं, जो अपना बलिदान दे कर भी डोर वालें को समर्थन देती हैं।
सच! कितनी अटूली जिन्दगानी हैं।
कितना अनोखा विश्वास
कितनी निराली श्रद्धा
सच! पतंग तु महान हैं 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक दर्शन - एक चित्रजी - एक गृह सेवा - एक डेला - एक मंदिर - एक हवेली हमारी आसपास अवश्य है, यह जो दर्शन, चित्रजी आदि हमारे अपने आपकी श्रद्धा और विश्वास का प्रतीक हैं।

हम उन्हीं ओर देखते हैं तो सोचते हैं वह भी हमें देख रहे हैं।

हममें सदा सत्य और संस्कार की अनुभूति कराते हैं।

ऐसा क्यूं?

ऐसा इसलिए की मैं सत्य हूं, मैं संस्कारी हूं। मेरी सत्यता से मैं मेरी आसपास आनंदमय वातावरण रच सकता हूं - शुद्ध समय काल रच सकता हूं - पवित्र क्रिया संस्थापित कर सकता हूं।

यह अनुभूति में सूरज शामिल होता हैं।

यह अनुभूति में मधुर हवा शामिल होती हैं।

यह अनुभूति में आसपास के पवित्र मन शामिल होते हैं।

यह अनुभूति में सूर संगीत शामिल हो कर गूंजते हैं।

यह अनुभूति में होंठ थडकते हैं

यह अनुभूति में धड़कन कुदती हैं

यह अनुभूति में नैनों नाचती हैं

यह अनुभूति में कंगना खनकती हैं

यह अनुभूति में पायल ठुमकती है

तो गा उठे जग सारा

" जय श्री कृष्ण " " जय श्री कृष्ण " " जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितनी मधुर जीवन लीला 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" एक और एकादशी "

हमारे जीवन में कितनी ही एकादशी तिथि आती हैं - हर एकादशी कोई संकल्प या कोई विचार करता हूं यह एकादशी यह व्रत यह एकादशी यह त्योहार यह एकादशी यह निधि यह एकादशी यह पूजा यह माहात्म्य यह दार्शनिक 🙏

बस एक के बाद एक ऐसी एकादशी जाती हैं जो मैं न समझ पाता हूं और कुछ कर सकता हूं 🙏

बस इतना ही - एकादशी एकादशी एकादशी बोलता रहता हूं।

एकादशी को जो समझे तो

जीवन मधुर

जीवन आनंद

स्वभाव विजयी

मन एकाग्र

तन निरोगी

धन उपयोगी

आत्म वियोगी

अर्थोपार्जन पुरुषार्थी

स्पंदन ज्ञानी

नयन ध्यानी

ऐसी एकादशी की वाणी 🙏

और मैं और मेरा जीवन!

सुख दु:ख भरी कहानी

गंगा यमुना का पानी

मंदिर मंदिर की भटकानी

चारों ओर कलयुग जुबानी

यही मेरी एकादशी विरानी

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ठंड का मौसम

मस्ती भरा दिन

सामने छाई झुमती मूरत

सर पर मयूर पंख

होंठ बजाये मधुर मुरली

नटखट कान्हा दिल ले गया

हां! नटखट कान्हा दिल ले गया

नैनों में काजल कानों में कुंडल

गले में वैजन्ती हाथों में कंगन

प्रेम मतवाला तिरछी नजरीयां

नटखट कान्हा दिल ले गया

हां! नटखट कान्हा दिल ले गया

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दोनों तरफ आग लगी

तेरा दिल जला मेरा दिल भी जला

जलते जलते तु मेरी मैं तेरा

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे प्यारी! तु दूर कहीं दूर

दूर दूर और दूर

नहीं नहीं तु मन में चूर चूर

चूर चूर और चूर

कभी नैनों में कभी होंठों पर

कभी सांसों में कभी राहों पर

एक ही तु राधा राधा राधा 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

पुष्टि रीत

पुष्टि हित

पुष्टि गीत

पुष्टि मित

पुष्टि प्रीत

पुष्टि अद्‌वैत

जीवन की यह सरल निधि जो अपनाये उन्हें मनभावन तनभावन हृदयभावन आनंधधावन परमानंद पावन पुष्टता पाये 🙏

एक नन्ही सी किरण धीरे धीरे ज्योत हो

ज्योत से ज्योत दीपक हो

दीपक से दीपक दीपावली हो

दीपावली से दीपावली से सूरज हो

ऐसी है यह अद्‌वैत का दर्शन 🙏

हे कृष्ण! तु मधुर चरित्र

हे वल्लभ! तु पुरुषार्थ चरित्र

हे अष्टसखा! तु जीवन चरित्र

तुझसे पाया पुष्टि चरित्र 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दूर दूर तक तकता था

न कोई नजर आता था

हां! पर कोई नजर में था

हां! पर कोई मन में था

हां! पर कोई धड़कन में धड़कता था

प्रेम कहता था नहीं नजर ना

विरह कहता था नहीं प्यास बुझा ना

दिल कहता था यही ही एक मन था

जो कहीं दूर जा बसा 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" कान्हा "

तेरा मुखड़ा देखा तो मन दीवाना हो गया

यह स्मरण करते करते तु नैनों में बस गया

ऐसा कया हुआ जो दिल कुर्बान हो गया

तेरे ख्यालों में खोते खोते जीना मधुर हो गया

तेरा मुखड़ा चंदा जैसा

तेरी अदा भंवर जैसी

तु रोज रोज छेड़े प्रेम लीला ऐसी वैसी

तेरे ख़्याल में मनवा नाचें धार धार

सब कुछ लुटते लुटाते जीना भूल गया

लडी तों से नैना होता है तब से दरदवा

न मुंदे पलक नयनवा न सुझे कोई करमवा

तेरी सूरत प्रिये ऐसी न बुझे प्रेम ज्योत जरा सी

जब से मन में जागा कल्याण हो गया

मेरा मन तन धन तुझ पर वार गया

कान्हा ओ कान्हा!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरी तस्वीर मन में बसे इसलिए यह नैनाएं हैं

तेरी महक तन में समाएं इसलिए यह नासिका हैं

तेरी लीलाएं जीवन में जंचे इसलिए यह कर्णे हैं

तेरा मधुर स्मरण याचे इसलिए यह अधरें हैं

तेरा कंथ की कंठी अतूट बंधे इसलिए गला हैं

तेरे प्रेम की अखंड ज्योत जले इसलिए आत्मा हैं

तेरे प्रीत का स्पर्श रहें इसलिए दिल हैं

तेरे प्रेरीत कार्य निपटते रहें इसलिए हस्तों हैं

तेरी धर्म संस्थापना पदयात्रा में सम्मिलित हो इसलिए पैर हैं

सच कान्हा! मेरा कोई ऐसा अंग नहीं जो तेरी प्रेम सेवा निर्माल्य में जुडा न हो 🙏

तु गजब का हैं तु अजब सा हैं तु बेहिसाब का हैं 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

આનંદ પરમાનંદ અને સર્વાનંદ

આનંદ ને સમજી

આનંદ ને લુટાવવો

એટલે પરમાનંદ

પરમાનંદ ની અનુભૂતિ પામતા

સર્વે ને આનંદિત કરીએ

એટલે સર્વાનંદ

વલ્લભ એટલે આનંદ

શ્રી વલ્લભાચાર્યજી એ પુષ્ટિમાર્ગ સ્થાપ્યો એટલે પરમાનંદ

પરમાનંદ લુટાવી સર્વેમાં આનંદ જગાવે

એટલે સર્વાનંદ 🌷🙏🌷

Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

एक कदम चले श्रीदामोदर हरसानीजी और पा गये श्रीपुष्टि प्रणेता का सर्वस्व 🌷🙏🌷

एक शिला रास्ते की संभाली श्रीकृष्णदास मेघनजीने और पा गये श्रीपुष्टि प्रणेताका संरक्षण 🌷🙏🌷

एक अष्टाक्षर पुष्टि सिद्धांतको स्वीकारा श्रीवैष्णवजीने और पाया श्रीपुष्टि प्रणेताका आनंद 🌷🙏🌷

हे श्री वल्लभ! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

🌷 🙏 🌷 " आशीर्वाद " 🌷 🙏 🌷

हे सूर्य! जब से सांस लेना हुआ तबसे बड़ी अनुकंपा 🙏

आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी मति सिद्ध करुंगा 🙏

हे धरती! जब से कदम धरा तबसे बड़ी रक्षा 🙏

आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी रज को विशुद्ध रखुंगा 🙏

हे सृष्टि! जबसे मन जागा है तबसे आपका समर्पण 🙏आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी प्रकृति की सौंदर्यता सुंदर रखुंगा 🙏

हे जल! जबसे तनने बंधारण बांधा तबसे आपका सिंचन🙏

मैं आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी रुग्णता की पवित्रता रखुंगा🙏

हे वायु! जबसे जीवन पाया है तबसे आपका सानिध्य 🙏

मैं आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी दया को सार्थक रखुंगा🙏

हे आत्मा! जबसे यह जीव में बसे हो तबसे जीवन तेजोमय करते हो🙏

मैं आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी उर्जा की पुरुषार्थता की ब्रह्मता को सिद्ध करुंगा 🙏

हे मातापिता! जबसे आपने मुझे जन्म दिया तबसे धर्मता धरने संस्कार का हस्त थामा🙏

मैं आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी वात्सल्यता का स्त्रोत बहाऊंगा 🙏

हे परब्रह्म! जबसे आपकी मूलभूतताका नूतन अंश प्रक्टाया है तबसे हर पुरुषार्थ कृति आपकी जगाई 🙏

मैं आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी पुरुषोत्तमता को सर्वोच्च पर्दापण करुंगा 🙏

मैं आपका दास मुझे सदा आपके सानिध्य में ही रखना 🙏 सदा कृपा बरसाना 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🙏 🌷 🙏

लगी तो से ऐसी नैना

जहां जहां देखुं वहीं तेरा मुखड़ा

तु मथुरा बसे या द्वारिका

तेरा दिल तो मुझमें ही धड़के

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

हे कान्हा! एक पल ही इतनी मधुर है

जिसमें तेरी याद है 🌷

हे कान्हा! एक क्षण ही इतनी आनंदमय है

जिसमें तेरी लीला है🌷

हे कान्हा! एक घड़ी ही इतनी तीव्र है

जिसमें तेरी दूरी है 🌷

हे कान्हा! एक अणु घड़ी ही इतनी स्पंदनीय है

जिसमें तेरी करुणा है 🌷

हे कान्हा! एक अणु क्षण ही इतनी अनोखी है

जिसमें तेरी प्रीत है🌷

कान्हा! हे कान्हा! प्रिय कान्हा!

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरा सुंदर चहेरा
उस पर नैन बसेरा
नजर से नजर टकरा
मन से मन संवारा
दिल तुझे पुकारा
यही प्रेम का इशारा
मेरे प्यार का सहारा
आजा मेरे प्यार दीदारा
🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷
तु मेरी सांवरी
मैं तेरा बावरा
तु कहे तु ही हो राधा
तो अवश्य मैं हूं तेरा कान्हा
🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷
गहराई से सुनना अपनी स्व आवाज से - अपने स्व स्वर से 🙏
"हरि सुंदर नंद मुकुंदा
नारायण हरि ओम् "
"हरि केशव हर गोविंदा
नारायण हरि ओम् "
अवश्य आप में से आनंद की एक सिसकारी निकलेगी और यह सिसकारी अपने अंग अंग में ऐसा स्पंदन जगायेगी 🙏
जो हमें बार बार गुनगुनाने का मन होगा 🙏
बार बार गुनगुनाने से पुकारने से नृत्य का आहवान होगा 🙏
यही नृत्य में श्री कृष्ण का आभास होगा 🙏
यही आभास अवश्य हममें ही श्री कृष्ण को प्रकट करता हैं 🙏
"हरि सुंदर नंद मुकुंदा
नारायण हरि ओम् "
हरि केशव हर गोविंदा
नारायण हरि ओम् "
🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷
" Vibrant Pushti "
"जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷
सौंदर्य - सुंदरता हमारी यही गूंज में दर्शन होगी 🌷 🙏 🌷

हे कान्हा!

तेरे स्मरण में निहारु

तेरे दर्शन में निहारु

तेरे ख्यालों में निहारू

तेरे स्वप्न में निहारु

तेरे स्पंदन में निहारु

तेरे कीर्तन में निहारु

तेरे प्रतिबिंब में निहारु

तेरे किरण में निहारु

तेरे रंग में निहारु

तु कहे मैं क्या करूं?

बस तेरी याद

बस तेरी फरियाद

बस तेरी साद

बस तेरी नाद

बस तेरी विषाद

तु आ आजा तु आ आजा

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

संग संग हां मेरे संग संग

है एक तरंग है एक उमंग

जो क्षण क्षण करें मुझे तंग

जो पल पल जगाये रंग रंग

सजाये सर पर मयूर पंख

रखें मधुर बंसी मुख अंग

छेड़े तान प्रेम गूंज बुलंद

मैं दौड़ी चली व्यंग व्यंग

धड़के जीया तेरे संग संग

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

हे कान्हा! तु कैसा है रे!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

यार! जैसे नैनों में सूरज नजर आता है

एक किरण जुड़ जुड़ कर एक इतनी विशाल ज्वाला हो गई जो सारे अनिष्टों को नष्ट कर देती है 🙏

यार! जैसे नैनों में सागर नजर आता है

एक एक बूंद से कितना अगाध जल समूह जो सारे तत्वों, वस्तुओं को अपने में समाए अनोखा परिवर्तन लाता है 🙏

यार! जैसे नैनों में जंगल नजर आता है

एक एक पत्ते अपने आपको एक एक के साथ इतना जुड़े रहते है कि सारी सृष्टि हरियाली अन्न और औषधियों से भरी सृष्टि को निरोगी और स्वस्थ रखता है 🙏

यार! जैसे नैनों में धरती नजर आती है

एक एक रज ऐसी बंधी है जो सदा जीवन को सुरक्षित और हर प्रकार के भार वहन कर सकते है 🙏

यार! जैसे नैनों में आसमां छा जाता है

ओहहह! हर कोई उनमें समाये अपने आप में खोये डूबे नजर आते है, हर कोई अपने आप के पुरुषार्थ में रहते है सबको बिना घबराए 🙏

ओहहह! कितनी श्रेष्ठता 🌷🙏🌷

और हम! सबकुछ हममें समाया हुआ है तो भी हम हर एक को तोडते है - छोड़ते है - बिगाड़ते है और नष्ट करते है 🌷🙏🌷

मानव - मनुष्य 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नाथद्वारा पहुंचा " श्री श्रीनाथजी " का दर्शन पाया 🌷🙏🌷

चंपारण्य पहुंचा " श्री वल्लभाचार्य " का दर्शन पाया 🌷🙏🌷

मथुरा पहुंचा " श्री श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी " का दर्शन पाया 🌷🙏🌷

गोवर्धन पहुंचा " श्री गिरिराज जी " का दर्शन पाया 🌷🙏🌷

मुखारविंद पहुंचा " श्री अष्टसखा " के दर्शन पाया 🌷🙏🌷

पुष्टि मार्ग धरा " श्री सुबोधिनीजी " के दर्शन पाया 🌷🙏🌷

गिरिराज परिक्रमा धरी " श्री वैष्णवजन " चरण रज पाया 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्रथम वैष्णव - दामोदर हरसानीजी 🙏

" सुन्यो पर समझा नहीं "

भ्रमित वाक्य का अंधश्रद्धा भरा अर्थ हमें सिद्धांत हीन करते हैं 🙏

हम जीवन जीते जीते कितनी शिक्षा पाते हैं - अनुभव करते हैं पर कभी ऐसा अर्थ करते हैं की - कोई कहे वह सुना नहीं और समझा नहीं, बस केवल अपने में मस्त रहना! सोच लो 🙏

अर्थ पथ निर्देशी और सिद्धांत सहीत ही उचित होता हैं 🙏

गैर समझ या अंधश्रद्धा और अंधविश्वास भरा नहीं होता हैं।

हम ज्ञान और विज्ञान और बिना तर्क रहेंगे तो ही हम सही मार्गदर्शन और सही आचरण करेंगे 🙏

यह कोई टिप्पणी या टीकात्मक नहीं हैं - यह शुद्ध व्याकरण अर्थ का पृथक्कृत समझना है 🙏

पुष्टि मार्ग अंधश्रद्धा और अंधविश्वास सिंचित मार्ग नहीं है 🙏 ठोर प्रमाणित और सार्थक सैद्धांतिक मार्ग हैं 🌷 🙏 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

" प्रथम वैष्णव - दामोदरदास हरसानीजी "

" दमला सो अमला "

श्री वल्लभाचार्यजी ने यह उपनाम और साथ साथ चरित्रता का प्रमाण 🙏

कितना बड़ा गौरव है मनुष्य जीवन का - जो साक्षात श्री आचार्य गुरुवर्य अपने स्व अनुभूति से मनुष्य जीव को प्रदान करे 🙏

यह ही कर्मो का फल है जो श्री कृष्ण कहते है - केवल कर्म करते रहो फल की इच्छा के बिना - जो कर्म योग्य हर कुछ योग्य ही योग्य 🙏

हां सो " दमला सो अमला " यह उपनाम के साथ जो कर्म में जीवन जी रहे है उसकी कृपा 🙏

उपनाम के साथ योग्य प्रमाणता, जो दमलाजी सदा सिद्धांत का अमल करते थे 🙏 सो अमला 🙏

जो सिद्धांत का अमल करे वह अमल ही होते है अर्थात स्वीकार्य और उसमें डूब जाना। जो डूब गया वह तैर गया सो अमला 🙏

अमला - जो सदा विशुद्ध हैं - पवित्र है - अपरसी है - जो सदा प्रसन्न है - परदु:ख भंजन है 🙏

जो श्री वल्लभ को पहचाने वही यह कृपा पावे 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" प्रथम वैष्णव - दामोदरदास हरसानीजी "

हमारी पुष्टि संस्कृति जो सनातन धर्म से उदभवीत इतनी परमानंदीय है जो हममें आनंद ही आनंद में डूबोयें 🌷🙏🌷

" दामोदरदास हरसानीजी " जो प्रथम वैष्णव - जिसके लिए श्री वल्लभाचार्य ऐसा उदगार व्यक्त करे - " दमला यह मार्ग तेरे लिए है " सोचे हम एक चरित्र के लिए कितना श्रेष्ठ प्रमाण 🌷🙏🌷

" यह मार्ग तेरे लिए उदभवीत है " ओहहह! अदभुत 🌷🙏🌷

यह चरित्र में ऐसा क्या है! जो इतनी बड़ी सार्थकता - यथार्थता सिद्ध की है!

हम भी यही सार्थकता और यथार्थता पा सकते है। जो पुष्टि सिद्धांत को सही समझ कर अपने में चरितार्थे 🌷🙏🌷

न अहंकार - न आडंबर - न अंधश्रद्धा - न अंधविश्वास

जो सत्य है वही स्वीकार्य 🙏

हमारे यही जगत जीवन में अपना सही व्यक्तित्व को जगाना है और सत्यता का सैद्धांतिक आचरण करना है 🌷🙏🌷

हम आये जगत में जो लेकर उन्हें अति उत्तम में प्रचंड प्रज्वलित कर अपने को तेजोमय होना है 🙏

श्री दामोदरदास हरसानीजी ने पुष्टि वैष्णवता से पुष्टि मार्ग की ससंस्थापना सिद्ध की और हमें उत्तम जीवन का मार्गदर्शन दिया 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" व्रज " लीला भूमि

" व्रज " प्रेम रज

" व्रज " प्रीत रंग

" व्रज " सखा संग

" व्रज " सखी अंग

" व्रज " गोप समर्पण

" व्रज " गोपि जन्म

" व्रज " भक्त सेवा

" व्रज " भक्ति तपस्या

" व्रज " प्रेम अवतार

" व्रज " श्री यमुना

" व्रज " श्री गोवर्धन

" व्रज " सूर्य धर्म

" व्रज " चंद्र रास

" व्रज " रसो वै से:

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

प्रेम 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक बार एक भक्त ने पुष्टि मार्गीय हवेली में दर्शन करते करते श्री प्रभु को दंडवत प्रणाम करते करते " जय श्री कृष्ण " की गूंज लगाई 🌷🙏🌷

हवेली में अपने आप चारों ओर से " जय श्री कृष्ण " के घंटारव उठने लगे 🌷

जो जो भी हवेली में थे वह सब सहसा हवेली के कमल चोक में आ कर आश्चर्यचकित होने लगे यह कैसा रव - गूंज और सूर 🙏

हवेली के मुख्याजी और हवेली के अधिकारी और कर्मचारी सब भीतरिया अचंभित हो कर आचार्य श्री के पास दौड़ पड़े 🙏

आचार्य भी यही सोच और विचारों में लीन हो गये 🙏

उन्होंने सब को साथ लेकर जहां से यह गूंज उठी थी वह स्थानक पर एक साधारण व्यक्ति अपनी दंडवत प्रणाम सेवा में डूबा हुआ था।

जैसे आचार्य जी ने वह व्यक्ति को स्पर्श किया तो हवेली के अंतपूर से मधुर लय की धून " श्री कृष्ण: शरणं मम " की सुनाई दी 🙏

आचार्य जी ने वह व्यक्ति को नमन करते कहा - हे परम भगवदीय वैष्णव! तुमने यह कैसी ज्योत जगाई है जो सारी हवेली गा रही है - श्री कृष्ण: शरणं मम।

उठो और कुछ अनुभूति का स्पर्श हमें भी कराओं 🙏

वह वैष्णव ने आचार्य जी के चरण स्पर्श करके कहा - हे आचार्यवर! आज मैं अपने आप से इतना व्यथित था की मैं अपने श्री प्रभु को " जय श्री कृष्ण " के अलौकिक नाम स्मरण से पुकार न सकु ऐसी संकोचता यह समाज में बिखरी है, उसे आज मैं श्री प्रभु को पुकार कर मुझमें क्या क्या दोष लगता है वह अनुभव कर सकु 🙏

जैसे मैंने दंडवत प्रणाम करते करते " जय श्री कृष्ण " की गूंज लगाई और सर्व दिशा से " श्री कृष्ण: शरणं मम " का सूर उठा 🙏

मैं श्री प्रभु में डूब गया 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरे दर पर आया हूं

तेरे मन में आया हूं

तेरी नज़र में आया हूं

तेरे अधर पर आया हूं

यूं ही आते आते तेरे स्मरण में आया हूं

यूं ही आते आते तेरे पास में आया हूं

पास पास से तेरे दिल में आया हूं

दिल दिल से प्रेम में छाया हूं

मिलन विरह की धूप छांव में तेरे दर पे आया हूं

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

हे राधा! तेरे सामने आया हूं

हे राधा! तेरे दरश में आया हूं

दरश दरश से तेरी राह में आया हूं

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

गोवर्धन जाता हूं

कुछ छूता है

विश्राम घाट जाता हूं

कुछ चिपकता है

वृंदावन जाता हूं

कुछ मचलता है

नंदगांव जाता हूं

कुछ खेलता है

बरसाना जाता हूं

कुछ बसता है

यही है व्रज की लीला 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मुझे मिला यह मनुष्य शरीर 🌷🙏🌷

अदभुत! मैं क्या कर नहीं सकता हूं?

मेरी नज़र जहां तक पहुंचे

मेरा मन जो तय करे

मेरा आत्म जो उजागर करे

मेरा ब्रह्म जो निर्णय करे

मैं कुछ भी कर सकता हूं

अकेला भी साथ साथ भी

यही सत्य है 🌷🙏🌷

यही परमेश्वर है 🌷🙏🌷

यही अवतार है 🌷🙏🌷

यही जन्म है 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मंगला श्री नाथजी

श्रृंगार श्री द्वारकाधीश

ग्वाल श्री नवनीत प्रिया

राजभोग श्री जगन्नाथ जी

उत्थापन श्री मथुरा नाथ जी

भोग श्री गोकुल चंद्रमा जी

संध्या आरती श्री मदनमोहन जी

शयन श्री गोवर्धन नाथजी

श्री वल्लभ कानी

श्री यमुना कानी

श्री गोवर्धन कानी

श्री विठ्ठल कानी

श्री गोकुल कानी

श्री हरिराय कानी

श्री अष्टसखा कानी

श्री ८४ वैष्णव कानी

श्री २५२ वैष्णव कानी

पुष्टि मूलत्व पुष्टि सुतत्व

पुष्टि शरणत्व पुष्टि कतृत्व

पुष्टि सेवत्व पुष्टि जीवत्व

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं सुबह उठता हूं

आज यह करना है यहां जाना है

ऐसा करना है ऐसा करवाना है

ऐसा होगा वैसा होगा

ऐसा ऐसा और ऐसा

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हे मेरे मित्र! 🌷🙏🌷

नहीं ऐसा ऐसा और ऐसा

प्रथम श्री प्रभु स्मरण🙏

द्वीतिय श्री मातापिता वंदन🙏

तृतीय श्री पति पत्नी प्रीति🙏

चतुर्थ श्री भाई बहन विजयी🙏

पंचम श्री पुत्र पुत्री वात्सल्य🌷

षष्ठ श्री गृह भूमि प्रणाम🙏

सप्तम श्री सूर्य नमस्कार🙏

अष्टम श्री जगत वंदन🙏

यही से हमारा सवेरा

यही ही हमारा बसेरा

यही से हमारा सीतारा

यही ही हमारा सहारा

यही से हमारा जीवन

यही ही हमारा तर्पण

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्यार में खो जाना

प्यार में डूब जाना

प्यार में गुल जाना

प्यार में एक होना

प्यार में समा जाना

सच! प्यार में ऐसा हो जाना

जैसे नीर

जैसे फूल

जैसे रंग

जैसे ज्योत

जैसे महक

जैसे सांस

जैसे दिल

जैसे आत्मा

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक पराकाष्ठा

एक अक्षर

एक नज़र

एक ख्याल

एक स्पर्श

एक याद

एक महक

एक सांस

हम

हम समर्पित

हम कुर्बान

हम उनके

बस हम नहीं

हम वो

हम कान्हा के

कान्हा कान्हा कान्हा

केवल कान्हा

" राधा "

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" चरित्र "

सच हम सांस लेते है - चरित्र के साथ

सच हम जीते है - चरित्र के हाथ

सच हम धर्म अपनाते है - चरित्र के पाथ

सच हम सत्य स्वीकारते है - स्व समझ के जात

सच हम प्रेम करते है - स्व उर्मि के जाग

सोचना - हम जीवन जीते है? या टटोलते टटोलते कहीं खोते रहते है?

🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

माधव माधव माधव माधव
माधव माधव माधव माधव
माधव माधव माधव माधव
ओहहह! माधव माधव रटते रटते
माधव आंगन पधारा 🙏

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण
ओहहह! कृष्ण कृष्ण रटते रटते
कृष्ण आंगन पधारा 🙏

यह कैसा संजोग
यह कैसा संयोग

हे माता! तुझे बार बार प्रणाम 🙏
तुने क्या छोटा सा नन्हा सा
नाम दिया है
कृष्ण कृष्ण कृष्ण
और हमने अपनी अंदर उतार दिया
कृष्ण कृष्ण कृष्ण
हमारे आंगन पधारे तीन माधव 🙏
आओ माधव हमारे ही नैनवा 🙏
आओ माधव हमारे ही मनवा 🙏
आओ माधव हमारे ही तनवा 🙏

नैनों से सदा दर्शन पायें
मन से सदा स्थिरता पायें
तन से सदा पवित्रता पायें
हे आओ माधव! हमारे आंगन
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे तपस्वी आत्मा! जीवन साथी स्वरूप 🙏

यह मनुष्य जीव जगत में हम पधारे और हमें जो अपना हाथ दिया, साथ दिया, पुरुषार्थ दिया, प्रेम दिया, अपने आपको समर्पण किया - तन, मन, धन और जीवन से आपको शत् शत् नमन 🙏

विचार, अक्षर, धर्म और कर्म की हर उपासना में हम साथ साथ जुड़े, अनेकों धागों से हम बंधे, बंधते बंधते एक हुए और जीवन सागर पार करने लगें। अनेकों सुख की घड़ी, मुसीबतों की क्षणे, तकलीफों की बौछारों, सामाजिक आंधियों और कौटुंबिक तूफानों में एक अडग योद्धा और आत्म ज्योत प्रज्वलित रख कर जो परमानंद जीवन महकाया 🌷

तुम्हें सलाम सलाम और सलाम 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर सांस उच्छवास में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर बूंद बूंद में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर लहर लहर में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर रज रज में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर अवकाश में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर ज्योत में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर विचार विमर्श में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर ख़्याल सवाल में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर रंग बिरंग में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर वन उपवन में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर पत्ते पत्ते में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर सूर राग में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर गीत संगीत में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर महक सुंगध में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर नज़र नज़र में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर कदम कदम में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर संग अंग में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर प्रीत प्रेम में

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितना अदभुत यह जगत है 👍
जन्म धरते ही माता पिता के साथ
भाई बहन के साथ
दादा दादी के साथ
कहीं कुटुंबी के साथ
बड़े हुए तो मित्रों के साथ
संबंधी के साथ
पड़ोसी के साथ
नजदीकिओं के साथ
युवा हुए तो प्रकृति के साथ
सृष्टि के साथ
पशुओं के साथ
पंखीओं के साथ
स्नातक हुए तो शिक्षा के साथ
विज्ञान के साथ
व्यवहार के साथ
समाज के साथ
वैष्वीक हुए तो संस्था के साथ
अनुशासन के साथ
अनेकों विषयों के साथ
अनेकों निष्णातो के साथ
विवाहित हुए तो पत्नी के साथ
अनेकों व्यक्तिगतो के साथ
पुत्र के साथ
पुत्री के साथ
वयस्क हुए तो जगत के साथ
धर्म के साथ
आध्यात्म के साथ
सेवा के साथ
बुजुर्ग हुए तो पोते पोति के साथ
पुस्तक के साथ
धर्म स्थानों के साथ
यात्रा के साथ
आखरी पड़ाव पर पहुंचे तो एकांत के साथ
तपस्या के साथ
अनुभव के साथ
अंतिम सांस तो आत्मा के साथ
ब्रह्मांड के साथ
ब्रह्म के साथ
परमात्मा के साथ
🌷🙏🌷
साथ साथ साथ साथ साथ साथ
" गजब " अजब " सहज "
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - पुष्टिसखा

सेवा सत्संग स्पर्श धारा

प्रकाशक: Vibrant Pushti - Vadodara

VIBRANT PUSHTI

53, सुभाष पार्क सोसायटी

संगम चार रास्ता

हरणी रोड - वडोदरा - 390006

गुजरात - India

Email: vibrantpushti@gmail.com

Mobile: +91 9327297507